## ❤️९। |हेब'पञ्चेय'चर्झेद'य'चलुगब'र्से| | IN PRAISE OF DEPENDENT ORIGINATION

हे र्डेंट ल सर्जे नबट ग्राग्य राया अहिं प्र By Je Tsongkhapa

2 प्रेमा हेन सुर्या है श्रेर्य। | रेप्पे उपास मा श्रे। | माट लिमा सर्घेट प्रसार है श्रेमा या | हेन उट प्रतिया पर प्रमुद्दा पर मासुद्रमा | Whatever degenerations there are in the world, The root of all these is ignorance; You taught that it is dependent origination, The seeing of which will undo this ignorance.

3 ને જે ર્સેન્ડન્ટ લ્વન મળ્યમાં | ફેન્ડ જેન્ડ વર્સવાયન વસુન વવે વમા | ર્હેન છે ન ક્ષેન્ડ મળે વનન જેન્ડ ફેન્ડના | દે લ્રુમ મિંદ નુ સુન ક્ષે વસુમાં | So how can an intelligent person Not comprehend that this path Of dependent origination is The essential point of your teaching?

4 रे 'झ' प्यम्बार त्रां के 'खें दि 'प्या ।

पर्केर 'परे 'क्से ते 'सु लिम मेबा ।

पर्केर प्रचार पर्चे हैं ना मेबा ।

दे सक्त सुर पर्चे हैं लिम हैं दा ।

This being so, who will find, O Savior, A more wonderful way to praise you

Than [to praise you] for having taught

This origination through dependence?

6 ๆ เราสู่ เาลนิ ซึ่ง เหล่ง เป็น เหล่ง เป็น เลือน เล้อน เล้

7 पश्रुक परि मानक र जा सर्वेद प्रमा ।
र्झेक पाने के प्रमा में के पाने के प्रमा में के प्रम में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रम में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रम में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रम में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रम में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रम में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रमा में के प्रम में के प्रमा में के प्रमा में के प्रम में क

8 को अर्थे केंद्र या को अर्थे क्षुच्या । को अर्थे क्षुंच्या को अर्थे अर्थे अर्थे क्ष्या । हेद्र केट प्रचेश प्रचुट सेग्या गुरुट अर्थे । क्षेंद्र या दे त्या यद्या युगा प्रक्या । Wondrous teacher! Wondrous refuge! Wondrous speaker! Wondrous savior! I pay homage to that teacher Who taught well dependent origination.

11 र्ष्ट्रिन्दे क्यालेगा र्स्ट्रिंप्य हेर् । ।
हेन्द्र्य चुट्रिन्द्र्य स्ट्रिंप्य का ।
रट्र्यलेन र्ष्ट्रिय के र्स्ट्रिंप्य का ।
चुर्चे द्र्य प्रयाप से से प्रयाप लेट्रा ।
For you, when one sees emptiness
In terms of the meaning of dependent origination,
Then being devoid of intrinsic existence and
Possessing valid functions do not contradict.

12 ने'प्यश'र्स्ग्'यम'अर्थेट'च'त्र| | ब्रेंट'प्य'चु'च'बे'-देट'लेट'| | चु'न्ट'न्डश'प'ब्रेंट'बेट्'प| १ अर'टपे'ग्प्यट'नु'ड्रेट'चम्'चलेन्। | Whereas when one sees the opposite, Since there can be no function in emptiness Nor emptiness in what has functions, One falls into a dreadful abyss, you maintain.

13 ને સુર હિંદ છે ન મુક્ર મળા | ફેક્ર વસુદ અર્થેદ ન પ્રેમ્શ માર્ચ મથા | ને ખદ ગાુક સ્ત્રે પ્રાપ્ત મથા માર્ચ મથા | ને ખદ ગાુક સ્ત્રે પ્રાપ્ત મથા માર્ચ મથા | મદ ગાલેક છે માર્ચ પ્રાપ્ત મથા માર્ચ મથા | મદ ગાલેક છે માર્ચ પ્રાપ્ત મથા માર્ચ મથા માર્ચ પ્રાપ્ત માર્ચ મથા માર્ચ પ્રાપ્ત માર્ચ માર્ય માર્ચ માર્ય માર્ચ માર્ય માર્ચ માર્ચ માર્ય માર્ચ માર્ચ માર્ય

15 रे ख्रेर पहेत त्राप्य हुट प्राप्य । स्मार्मिय केंस प्रमाप्य प्रमाप्य । स्मार्मिय केंस प्रमाप केंस प्रम केंस प्रमाप केंस केंस प्रमाप केंस प्रमाप केंस प्रमाप केंस प्रमाप केंस प्रमाप के

17 ने प्वेन्ट्रस्य प्रविद्यस्य प्रविद्या विष्णा ।

श्रेट्र मेरि स्व्याप्त प्रविद्या स्वर्या विष्णा ।

श्री प्रविद्या स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स

18 रूट राष्ट्रित त्याद त्याद स्थान स्थान होता ।
दि त्या या हेत त्या त्य दे त्य हुट रायदी ।
इस मालगा श्रम स्थान होता ।
से त्या व्या त्य त्या हुँ सार्चे र में स्था ।
That there is no intrinsic existence at all

And that all functions as "this arising In dependence on that," what need is there to say That these two converge without conflict?

19 महेन न्याय हुट मदी हु अळन चुंशा । અત્રમ લુ માયા એ મहेन લેશા । યેનાય નાયુદ્ધાવ મેં માર્ગેન હુંગ છું ! શ્રામાન સેમ્પ્રાપ્ત હુંગ ! "It is through the reason of dependent origination That one does not lean towards an extreme"; That you have declared this excellently is the reason, O Savior, of your being an unexcelled speaker. 20 प्रै-गाुं के टें स्थे क्षेट्र न प्रदार । प्रदे प्रायम प्रियम प्रदे प्रायम प्रदे प्रायम प्रदे प्रायम प्रदे प्रायम प्रदे प्रायम क्षेत्र प्र

21 पदि प्यसादें सर्जन सुन स्वाद्या । पदि प्यसास दि सुन स्वाद्या । र्ख्या पदि सार्चि द प्या सर्चे द स्वी । सर्चे द स्वाद्या सुन स्वी । प्रभेत । स्वाद्या स्वी प्रभाव । What is more amazing than this? What is more marvelous than this? If one praises you in this manner, This is real praise, otherwise not.

22 ર્ફ્રોદ્યાયમાં ગુનું તું ત્વાનું ત્વાં એયા | ગાંદ ભેગા છું તું તું દ્વાનું ત્વાં માં માં | ત્રે એમાં મદ વિભ્રાસેનું માં તે એને પાંતે ક્યા | એ ત્વર્ને તું સુમાં માર્જમાં રે ખેંદ્રા | Being enslaved by ignorance Those who fiercely oppose you, What is so astonishing about their being Unable to bear the sound of no intrinsic existence?

23 र्षेट्रणुःगस्ट्रम्गम्छेश्यदेशस्ट्री । यहेत्रत्वश्यव्यक्टर्याग्यश्चर्याः स्ट्रिंट्रिट्रट्रेशेय्वर्च्याः यदेःवर्णेर्येट्रस्ट्रस्

But having accepted dependent origination, The precious treasure of your speech, Then not tolerating the roar of emptiness – This I find amazing indeed!

24 रूट मिल्र भेट या मिल्र मिल

The door that leads to no intrinsic existence, This unexcelled [door of] dependent origination, Through its name alone, if one grasps At intrinsic existence, now this person: 25 ฉฺสฑฺลาลธ์ฑฺสฺลลฺลาฃฺลาฉฺฑฺฉาฺฺฐัรฺนฉฺ๊ | เ ฉฺธฺฑฺะัฑฺลาลฺูรฺรฺาฐฺรฺน| | ซ์ฺรฺรฺฃฺลาฃฺรฺนฉฺาฒฺลาละรฺรฺน| | ฐฺฉลาฑฺะฑฺลาลฺาฉฺบฺา Who lacks the unrivalled entrance, Well travelled by the Noble Ones, By what means should one guide him To the excellent path that pleases you?

26 रूट राष्ट्रिक राज्ञें का श्रीक र केंक्स श्रीक र प्राप्त हैं का राज्ञें का का राज्ञे

27 ने स्वीतः या हेत्र त्र या या व्याप्त व्याप्त या प्राप्त या वित्र स्वीतः या वित्र स्वाप्त स्वा

Therefore whatever originates dependently, Though primordially free of intrinsic existence, Appears as if it does [possess intrinsic existence]; So you taught all this to be illusion-like.

28 र्षेट्रण्चैशः है: स्ट्रेस्यः सम्रुद्धः सः या । स्वानशः क्षेट्रः सम्युद्धः सम्युद्धः सः या । स्वानशः क्षेट्रः सम्युद्धः सम्युद्धः सः या ।

Through this very fact I understand well The statement that, to what you have taught, Those opponents who challenge you Cannot find faults that accord with reason.

29 डि.सून् डि.स्.प्रे.चन्द्र सम् । अर्चेट न्द्र सम्बद्ध र न्द्र संस्था । र्से पर्देग्य सम्दर्भ र प्रेन्य श्री । गे स्मन्य सेट न्द्र सहित् स्री र स्त्री ।

Why is this so? Because by declaring these Chances for reification and denigration Towards things seen and unseen Are made most remote.

30 हिंद्रिः शुःश्वानाः त्रुशेद्रायम्। अर्थेट्रायते क्षुश्चात्र स्त्रेत्र त्युट्रामी। अर्थेट्रायते क्षुश्चात्र स्त्रेत्र त्युट्रामी। क्ष्यात्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्रेत्र स्त्र स्त

Through this very path of dependent origination, The rationale for your speech being peerless, Convictions arise in me [also] That your other words are valid too.

You who speak excellently by seeing as it is, For those who train in your footsteps, All degenerations will become remote; For the root of all faults will be undone.

32 हिंद्'ग्री'नब्रुक्'यम्'स्ट्रीन्य्यायम् । धुक्'मेट'ट्य'न'नब्रेक्'नुष्य'ग्रट'।। धु'स्ट्रीर'र्स्केक्'न्य्य'यंत्र्य'यान्वेक्।। नद्यानुः'द्व'न्य'नक्क'स्ट्रीर'र्से।

But those who turn away from your teaching, Though they may struggle with hardship for a long time, Faults increase ever more as if being called forth; For they make firm the view of self.

E-mao! When the wise comprehend The differences between these two, Why would they not at that point Revere you from the depths of their being?

34 र्षेट्र मुश्चर दुःश के लिम र्श्वेश । कःनुश के भी र्देश के स्थापत्र । । र्देश श्चे रहेश ची रेश के दुःया । देश सम्बद्ध स्थापत्र सम्बद्ध ।

Let alone your numerous teachings, Even in the meaning of a small part, Those who find ascertainment in a cursory way, This brings supreme bliss to them as well

36 पॅ्र गुट प्रके प्रद्यागर्य मुंग्य परि। । श्रॅग्गण सुर दे सर्जिय पर्मा। र्छिट प्राट स्राय प्राट स्रेस प्राप्ता। परि प्राट स्राय प्राट स्रिस पर्मा। Nonetheless, before the stream of this life Flowing towards death has come to cease That I have found slight faith in you – Even this I think is fortunate.

37 र्ब्रेन्यतिःन्दान्तः हेन्यत्येयः र्ब्रेन्यः प्टा । वेशः र्यः नदः नः हेन्यः त्येयः वेशः यः मृत्रेश । देवः हेन्यः देवाः नेश्वः यः वित्रः यः विन् । स्वाः चुदः योगशः यरः र्षेद्यः स्रष्टेनः मृत्रः येवन ।

Among teachers, the teacher of dependent origination, Amongst wisdoms, the knowledge of dependent origination – You, who're most excellent like the kings in the worlds, Know this perfectly well, not others.

38 र्षे प्राचित्र है ख्रे प्राचाप्य सङ्घ्याचा ।
हेन पर्वापा है प्राचाय सम्भाग निमान ।
देखार कुर्य प्राचाय सम्भाग निमान ।
देखार कुर्य प्राचाय सम्भाग निमान ।
देखार कुर्य प्राचाय सम्भाग ।
देखार कुर्य कुर्य सम्भाग ।
देखार कुर्य कुर्य सम्भाग ।
देखार कुर्य कुर्य सम्भाग ।
देखार कुर सम्भाग सम्य

39 'णु'-અવેં'(ઇંન્')' નક્ષ્ર, માં તે | | નાદ ના ક્રાંત્ર વિલ્મુ ક્રાંત્ર ધ્રુંત્ર ધ્રુંત્ર | | દેન્ ના ક્રમ લંદન વ્યાન સું તે મુખા | ઇંન્ ત્રક્ષ્ય વેદન યત્ર સું સે મુખા | Alas! Your teaching is such, In whosoever's ears it falls, They all attain peace; so who would not be Honoured to uphold your teaching? 40 समः र्मेतः सम्बदः दमः वर्षेसाः । क्षमः वर्षेनः वर्षेनः वर्षेनः वर्षेतः । क्षेनुदेः र्देनः महिमः क्षेत्रः स्त्रेनः या ।

It overcomes all opposing challenges; It's free from contradictions between earlier and latter parts; It grants fulfilment of beings' two aims — For this system my joy increases ever more.

41 વર્ડ ત્યાં ચુેમ તું ફિંદ ગુંચ કો | વ્યાપામ સું ૧૯ માલક તું કોંગ | સ્વાપામ સું ૧૯ માલક તું કોંગ | સ્વાપામ સે ૧૯ માલક તું કોંગ | માદ ચારે સે ૧૯ માલક તું કોંગ માદ ચાર માદ ચા

42 નાદ મો પોંત ક્ત અર્જેદ રાખેશ | લુગાયા સુગાયા સુ

43 દેખાં સુંદ્ર નુવાયાં ગુયા લે | | કૃવા તારે તું વા સાંધા ખેડા | દેશ સુંગે મારે દેશ વિલે તે દુ | | વડ્યા વા ખેડ કે વાર્તે દેશ નું કૃડા | The intensity of that sorrow Does not let go of my mind, Just like the mind of a mother [Constantly] goes after her dear child.

45 વર્તે 'ત્રેવરેલ્ન-'ગાસુન્યાસુન્ય સુચારુ| | એર્વ્યાસુન્ય વર્ષ ગાસુન્ય ગાસુન્ય ગાસુન્ય ને ને | વ્યાપ્ત અંત્રા પ્રાથમ | વ્યાપ્ત સુચાર ને વ્યાપત સુચાર ન વ્યાપત સુચાર ને વ્યાપત સુચાર ને વ્યાપત સુચાર ને

 47 สูลานร้างชั้น สุงานรุกากใจาล้า |

 นุกรางารางงานหามานาน |

 ผู้สางาน นุการาง ผู้รางใจ |

 รักษามานาน รางหามานาน |

 รักษามานาน รางหามานาน รางสาง |

 Seeing this situation, I strove

 With a multitude of efforts

 To follow after the learned ones

 And sought your intention again and again.

Of both our own [Middle Way] and other schools, My mind became tormented ever more Constantly by a network of doubts.

Who dispels the darkness of extremist hearts And outshines the constellations of false speakers – When, through my teacher's kindness, I saw this My mind found a rest at last.

52 સર્દ્ર મંગુન વસ નશુદ મેં તે | સર્દ્ર મંગ્રહેં ગાંચેન પે પ્રદેશ પ્રાથમ માંથી | પે ફે ફે પ્રાથમ માંથી | વર્ષે પ્રાથમ સામા સામા માંથી | Of all your deeds, your speech is supreme; Within that too it is this very speech; So the wise should remember the Buddha Through this [teaching of dependent origination].

53 ब्रॅब्र-देते हेबासुर्यान्त मुद्या विद्या हो। मुद्याय स्वीत ब्रिटाया श्वीत्वाय स्वाय स्वीत स्वीत स्वाय स्वीत स्वीत स्वाय स्वाय स्वीत स्

Following such a teacher and having become a renunciate, Having studied the Conqueror's words not too poorly, This monk who strives in the yogic practices, Such is [the depth of] his reverence to the great Seer!

55 स्रम् अह्र ने प्राप्त स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् । त्र में मृत्य स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् । त्र स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् । स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् । स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् ।

May the teaching of this Beneficent One till world's end Be unshaken by the winds of evil thoughts; May it always be filled with those who find conviction In the teacher by understanding the teaching's true nature.

56 વર્કેન નિશ્વાસ્થિત વિદ્યાસભાગ માર્ટ નિયા | શુવા પાવે ભાગમાં વાવા કર્યું ના શસ્ત્રા હર્દ નિયા | સુરા ક્રિયા હ્રાં માં મુદ્દા નિર્દેશ પાવા | સુરા કેમાં હ્રાં સાયા ફ્રિંદ પાત્રા સાચુરા કેમાં | May I never falter even for an instant To uphold the excellent way of the Sage, Which illuminates the principle of dependent origination, Through all my births even giving away my body and life.

57 पर्नेक्'स'अर्केन्'रेक्'र्नाप्'सम्मद्भाभेर'ग्रीका । क्रम'म्रक'श्रीद'सं सहंद'क्ष'मञ्जूनका'स'पदी । चनका'नाद'लेन्'नीका'प्रसेपा'नाद्र'प्रशुक्ष'सपी । क्रम'याद्र'र्देच्'र्यपे'श्रेक्'अर्ळक्'प्दप्'नाद्र'र्मेन् । May I spend day and night carefully reflecting, "By what means can I enhance This teaching achieved by the supreme savior Through strenuous efforts over countless eons?"

58 क्ष्मा नमस्य न्या सम्बद्धा ने राम ईवा साम । क्ष्मा नमस्य न्या सम्बद्धा ने राम हेवा क्षेत्र सम्बद्धा न सम्बद्धा निवास के समाम के सम्बद्धा निवास के स्वास के स्वास के स्वास के सम्बद्धा निवास के स्वास के स्वास

This hymn entitled "Essence of Well-Uttered Insights," praising the unexcelled Teacher – the great friend to the entire world [even] to the unfamiliar – for teaching the profound dependent origination, was composed by the well-read monk Lobsang Drakpai Pal. It was written at the heavenly retreat of Lhading on the towering mountain of Odé Gungyal, otherwise known as [Ganden] Nampar Gyalwai Ling. The scriber was Namkha Pal.